

1



ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक



आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

जब तक सूरज चाँद रहेगा, महाशय जी का नाम रहेगा
राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज के संस्थापक
महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी को शत शत नमन

वर्ष 44, अंक 2 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 7 दिसम्बर, 2020 से रविवार 13 दिसम्बर, 2020
विक्रमी सम्बत् 2077 सृष्टि सम्बत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष : 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

भारत मां के वीर सपूत, महर्षि दयानन्द के अनन्य शिष्य पद्मभूषण महाशय धर्मपाल हुए अमर

आर्य समाज की आन-बान और शान के प्रतीक महाशय जी के प्रस्थान से संपूर्ण आर्य जगत में शोक की लहर

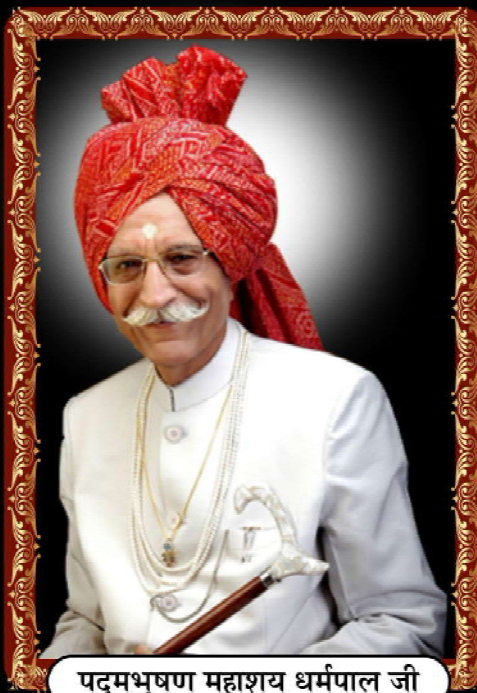
आर्य नेताओं, राजनेताओं, उद्योगपतियों, समाज सेवियों तथा मानव समाज के हर वर्ग ने दी अश्रुपूरित श्रद्धांजलि।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, समस्त आर्य प्रांतीय सभा, आर्य समाज, आर्य शिक्षण संस्थाएं, गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, अनाथालय, वानप्रस्थ आश्रम, गौशालाएं एवं अन्य अनेक सेवा प्रतिष्ठानों के अधिकारों, कार्यकर्ता और सदस्यों ने दी भावपूर्ण श्रद्धांजलि

कीर्तिर्यस्य स जीवति - महान कीर्तिवान पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी सदा-सर्वदा अमर रहेंगे

आर्य समाज के संस्थापक
महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य,
यज्ञ, योग, स्वाध्याय,
सेवा, साधना के प्रेरणा स्रोत
आर्य जगत के महान दानवीर भामाशाह,
राष्ट्र भक्त, ईश्वर भक्त, यज्ञ भक्त,
कर्मवीर, धर्मवीर, शूरवीर,
विश्वविख्यात समाज सेवी,
भारत की महान विभूति,
अनेक विद्यालयों संस्थापक,
गुरुकुलों के पोषक,
गौभक्त
पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी
को शत शत नमन

27 मार्च 1923



पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी

एम.डी.एच-मसालों के शहंशाह,
वैदिक धर्म के अनुगामी,
अनेक संस्थाओं के पालक
संस्कृति और संस्कारों के संपोषक,
चिकित्सा सेवा के कीर्ति स्तम्भ
शिक्षा क्रांति अभियान के जनक,
वेद विद्या के उन्नायक,
चिर युवा,
आर्य नायक, धर्म नायक, राष्ट्र नायक,
ईमानदार, त्यागी, तपस्वी,
संकल्प के धनी,
अथक परिश्रमी, पुरुषार्थी,
एम.डी.एच के चेयरमैन
पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी
को शत शत नमन

3 दिसम्बर 2020

समस्त आर्य जगत की अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

3 दिसंबर 2020 का प्रभात
दे गया दुःख भरा आघात
आज एक अपना
अपनों से भी ज्यादा अपना
अचानक हमें अकेला
छोड़कर चला गया
वह अपनों से भी ज्यादा अपना-सा
एक स्वर्णिम युग का सपना-सा
सब कुछ अधूरा रह गया
आज एक गीत-संगीत
सब गूंगा-सा हो गया

एक ज्योति अनंत की
यात्रा पर चली गई
भय, भ्रम और भूख से रहित
होगा मानव समाज
आशा-उत्साह और उमंग से
खिल उठेगा नूतन प्रभात
ऐसी कल्याणकारी
राह दिखाने वाला चला गया
उनका जीवन एक महान काल था,
परोपकार की कविता था
वेदों की गूंज, गुलाब की सुगंध था

ऐसा अनोखा दीप था
जो लगातार अंधेरों से लड़ता रहा
हमें विश्व कल्याण का रास्ता दिखाकर
निर्वाण को प्राप्त हो गया
आर्य समाज आज शोकमग्न है
उसका लाडला चला गया
मानवता आज खिन्न मना है
उसका संपोषक सो गया
शांति आज खुद अशांत है
उसका रक्षक चला गया
दीन दुःखियों का सहारा चला गया



महाशय जी के कीर्तिमान, सम्मान एवं संक्षिप्त प्रेरक जीवन वृत्तान्त

की, कक्षा 5 तक पढ़ने के बाद अपने पारिवारिक व्यापार मसालों के कार्यों से आप जुड़ गए। सन 1947 में भारत विभाजन के कारण आप अपनी जन्मभूमि को छोड़कर परिवार सहित खाली आप भारत आ गए। इसके उपरान्त अथक परिश्रम और पुरुषार्थ करके आपने एक संघर्षशील जीवन यात्रा का शुभारंभ किया और हर क्षेत्र में लगातार सफलता के अनेकानेक कीर्तिमान स्थापित किए।

इस बीच आपने तांगा भी चलाया और छोटे से छोटे, बड़े से बड़े हर तरह के मेहनत कश कार्य भी किए लेकिन कभी हार नहीं मानी, आपका तो हमेशा यही मानना था कि चाहे जीवन में हार जाओ लेकिन कभी हार नहीं मानो, इसी दृढ़ इच्छाशक्ति और निरंतर के प्रयास तथा कड़ी मेहनत के बल पर आपने एमडीएच कंपनी को शिखर तक पहुंचाने

का संकल्प साकार कर दिखाया। आज आप हमारे बीच में नहीं हैं, किंतु आपकी सुदीर्घ जीवन यात्रा से जुड़े हुए प्रेरक प्रसंग राष्ट्र सेवा, मानव सेवा, चिकित्सा, शिक्षा और सुरक्षा के लिए किए गए योगदान को मानव समाज सदा-सर्वदा स्मरण रखेगा। आपके महान व्यक्तित्व और परोपकारी कार्यों को ध्यान में रखते हुए 2019 गणतंत्र दिवस पर भारत सरकार द्वारा आपको पद्मभूषण सम्मान प्रदान किया गया, आर्य समाज द्वारा आर्य रतन सम्मान, कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड, भारत सरकार का "ITID Quality Excellence Award" यूरोप में मसालों की शुद्धता के लिए पाठ्य विषय प्रदान किया गया। कनार्टक के राज्यपाल ने आपको "Reader Digest Most Trusted Platinum Award-2008" प्रदान किया। सम्मानों के इस

अनुक्रम में आपको अनेक सम्मान प्राप्त हुए। आपने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाओं और संदेशों के अनुसार मानव सेवा के अनेकानेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं, शिक्षा के क्षेत्र में स्कूल और चिकित्सा के क्षेत्र में अस्पतालों के साथ-साथ वृद्धाश्रम, अनाथालय, गौशाला आदिवासी क्षेत्रों में बच्चों के लिए बड़े-बड़े स्कूल, छात्रावास, बालवाड़ी, गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, यज्ञशालाएं, प्रतिभावान बच्चों के लिए प्रतिभावान संस्थान, विधवा तथा निर्धन बेटियों के विवाह में सहयोग करना, इत्यादि मानव सेवा के कार्य किए हैं। 98 वर्ष की अवस्था में आपको अमर होने पर आर्य समाज, देश और दुनिया की विनम्र श्रद्धांजलि, आपके समस्त सेवा कार्यों को देश व समाज सदैव चिरकाल तक स्मरण रखेगा।

सम्पादकीय

बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी महाशय धर्मपाल जी को शत-शत नमन

बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी का जीवन सद्गुणों की बहुमूल्य खान था। आपके कर्मों की कुशलता, सद्भाव, सौम्यता, दानशीलता, परोपकार की भावना आदि समस्त प्रेरणाएं मानव समाज की धरोहर हैं। आपकी अनेकानेक विशेषताओं में स्मरण शक्ति बड़ी अद्भुत थी। संपूर्ण विश्व में आपके लाखों चाहने वाले थे और हजारों लोग आपके कार्य-व्यापार से जुड़े थे। परिवार, समाज, संगठनों के सैकड़ों लोग प्रतिदिन आपसे मिलने आते, अधिकांशतया आप अपने सभी स्वजनों को उनके नाम से पुकारते और उससे भी ज्यादा लोगों को आप उनके चेहरों से पहचान लेते थे। कौन किस राज्य, नगर, स्थान का रहने वाला है, आप उसे भरी भीड़ में भी पहचान लेते थे। आपकी स्मरण शक्ति के विषय में इससे भी ज्यादा आश्चर्य तब होता था जब आप इतने व्यस्त होते हुए भी अपने जीवन के बहुमूल्य संस्मरण, ज्ञान-ध्यान की बातें, सारगर्भित किस्से-कहानियां, संस्कृति-सभ्यता के महानायकों के नाम, उनकी ऐतिहासिक प्रेरणा-प्रेरक प्रसंग आदि ऐसे सुनाते थे जैसे कि यह कल की ही बात हो।

हर तरह के उतार-चढ़ाव भरे जीवन में सदैव हंसते-मुस्कराते हुए दिखाई देने वाले महाशय जी मानव कल्याण के लिए हमेशा धीर-गंभीर तथा चिंतन करते रहते थे। साधरणतया आपको गंभीर मुद्रा में किसी ने देखा हो, ऐसा मुझे विश्वास नहीं होता। किंतु आधुनिक युग में शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, पारिवारिक, सामाजिक, आध्यात्मिक स्तर पर समाज में आ रही गिरावट के लिए आप सदैव गंभीरता से विचार करते थे। अपने लिए और अपनों के लिए तो सभी सोचते हैं, किंतु जो मानवमात्र के लिए चिंतित हो और केवल चिंतित ही नहीं समाज के उत्थान के विषय में विचार करे, वह मनुष्य नहीं देवता होता है।

महाशय जी एक महान देवता थे। आपका हृदय तब द्रवित हो उठता, जब आप आजकल के समय में हो रहे मानवीय मूल्यों के पतन को देखते-सुनते थे। समाज में आपा-धपी मची हुई है, स्वार्थ मनुष्य के सिर पर बैठा हुआ है, वायु प्रदूषण-ध्वनि प्रदूषण और वैचारिक प्रदूषण राक्षस की तरह सब कुछ ग्रसने के लिए तैयार है। संयुक्त परिवार प्रणालि टूटकर बिखरती जा रही है, रिश्ते-नातों की गरिमा समाप्त होता जा रही है, धर्म-अध्यात्म में ढोंग-पाखंड में भोली जनता फंसी जा रही है। कर्म पर लोग विश्वास कम कर रहे हैं, परिश्रम और पुरुषार्थ के साथ परमात्मा की सच्ची भक्ति, सेवा भाव से लोग अंजान होते जा रहे हैं। इस तरह की तमाम समस्याओं के प्रति आप गंभीर चिंतन करते थे और इन सभी समस्याओं के समाधान के लिए आप आर्य समाज द्वारा संचालित सेवा प्रकल्पों को और ज्यादा तीव्र गति से चलाने की प्रेरणा प्रदान करते थे, आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में अपार धनराशि देकर आप सहयोग करते थे।

आप हमेशा यही सोचते-विचारते थे कि मानव मानव बने, समाज में अच्छाई, सच्चाई और भलाई का वातावरण बने, सच्चे अर्थों में धर्म का प्रचार-प्रसार हो, प्रेम-सौहार्द, सहानुभूति और सहयोग का सद्भाव मानव मात्र का आभूषण बने, स्वार्थ-छल-कपट से सब ऊपर उठें। ऊंच-नीच, भेद-भाव, घृणा पूरी तरह समाज से समाप्त हो, सुख-शांति और समृद्धि की अभिवृद्धि हो। अपनी उन्नति-प्रगति तथा सफलता के साथ सब दूसरों को भी आगे बढ़ने में मददगार बनें। ऐसी कल्याणकारी मंगल योजनाओं के लिए आप, सदैव चिंतनशील रहते थे।

सबको प्रसन्नता प्रदान करना महाशय जी प्रमुख विशेषताओं में से एक था। प्रसन्नता मन का विषय है और महाशय जी ने 98 वर्ष की अवस्था में भी अपने मन के

महाशय जी अक्सर कहा करते थे

- सदा एक जैसे दिन किसी के नहीं रहते, मनुष्य को हमेशा आशावान रहना चाहिए।
- पैसे में सुख दो घड़ी का, सेवा में शान्ति जीवन भर की।
- दूसरों को आगे बढ़ता हुआ देखकर ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए, उनसे प्रेरित होकर स्वयं भी आगे बढ़ना चाहिए।
- सुख में कभी इतराना नहीं और दुःख में कभी घबराना नहीं।
- दुःख-पीड़ा के समय में शांत तथा समभाव में रहना महानता है।
- दुनिया तो उलझन देती है, प्रसन्नता भगवान की कृपा से मिलती है।
- भगवान से हमेशा प्रार्थना कीजिए कि हे प्रभु, मेरा मन हमेशा मानव सेवा लगा रहे।



वातावरण को अठारह वर्ष के युवा जैसी मधुरता से युक्त बनाकर रखते थे। आपके जीवन की यात्रा कभी भी सीधो और सरल नहीं रही, हमेशा आपके साथ धूप-छांव का द्वंद्वमय खेल चलता रहा। किंतु महाशय जी ने अपना मानसिक संतुलन इतना मॉटेन रखा कि दुःखों की आंधियों के बीच भी हिम्मत कभी नहीं हारी और एक निश्छल बाल मुस्कान अपने मुख मंडल पर सदैव शोभायमान रखते थे।

आपकी ये मनमोहक मुस्कान, प्रेम-प्रसन्नता से हरा-भरा मन हमेशा खिला-खिला ही रहा। मानव समाज को प्रेम, प्रेरणा और उत्साहवर्धन प्रदान करते रहें। प्रसन्नता जैसे महत्वपूर्ण विषय पर महाशय जी कहते थे-

फूलों से तुम हंसना सीखो, भंवरो से तुम गाना, फूल हंसते-मुस्कराते हैं, भंवरे गुंजन करते हैं, सारी प्रकृति आनंद उत्सव मनाती है तो मनुष्य क्यों अपना चेहरा लटकाए रहता है? फोटोग्राफर भी फोटो लेने से पहले कहता है- प्यार से मुस्कराईए। जब दस सेकेंड मुस्कराने से फोटो अच्छी आ सकती है, तो अगर हम हमेशा मुस्कराएं तो जीवन कितना सुंदर बन जाएगा?

महाशय जी कहा करते थे-

कर गरीबों का भला, बदनसीबी पर रहम, सेवा में कल्याण है, तू सेवा करना सीख ले, कर्म तेरा हो भलाई, धर्म तेरा हो भलाई, सेवा बिन, मेवा नहीं, सेवा करना सीख ले, कर भला, हो भला, यही है जीवन जीने की कला।

आप सदा-सदा के लिए अमर हो गए। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा सभा द्वारा संचालित समस्त शिक्षण संस्थाओं की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि, ईश्वर महाशय जी की पुण्यात्मा को उनके गुण कर्म स्वभाव के अनुसार शांति सद्गति प्रदान करे और हम सबको उनका वियोग सहने की शक्ति दे।

- सम्पादक

1) ईमानदार बनना:- आजकल समाज में अक्सर सुनने को मिलता है कि ईमानदारी में कुछ नहीं रखा, हमने देख ली है ईमानदारी करके, ईमानदार आदमी को जीवन में दुःख ही मिलता है। जबकि बेईमान लोग मजे उड़ाते हैं, उनको सारी सुख सुविधाएं यूँ ही मिल जाती हैं। इसलिए कुछ लोग तो यहां तक कह देते हैं कि भाड़ में गई ईमानदारी ?

जबकि महाशय जी ने कहा है कि ईमानदार बनकर जीवन जीना ही सफलता की ओर पहला कदम है। इस रहस्य को गहराई से समझिए, आजकल समाज में ईमानदार आदमी अपनी ईमानदारी को लेकर बैठा रहता है और उचित परिश्रम और पुरुषार्थ के बिना ईमानदारी भी सफलता नहीं दिलाती, आदमी कितनी भी प्रार्थना करता रहे, कितना भी ईमानदार क्यों न हो, जब तक वह ईमानदारी के साथ अपने कर्तव्य-कर्मों को लगन से नहीं करेगा तब तक उसकी ईमानदारी भी उसके काम नहीं आएगी। बेईमान लोगों को देखिए वे बेईमानी करने के लिए दिन-रात एक कर देते हैं, वे इतनी मेहनत करते हैं, इतना परिश्रम करते हैं कि जब तक अपने बेईमानी के लक्ष्य को प्राप्त नहीं करते, वे हार नहीं मानते, वे इसलिए बेईमानी में सफल हो जाते हैं और ईमानदार आदमी हाथ पर हाथ रखे अपनी ईमानदारी का ढोल पीटता ही रह जाता है।

महाशय जी ने स्वयं ईमानदारी से अपने कर्तव्य-कर्मों को निभाया है। अपना हर फर्ज खुशी से निभाया है। अपने प्रति और परिवार के प्रति, अपने रिश्ते-नातों के प्रति, समाज के प्रति और देश के प्रति हर हाल में, हर काल में, हर स्थिति, हर

महाशय जी की महान शिक्षाएं

संसार में प्रत्येक व्यक्ति जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करना चाहता है किंतु केवल सफलता की कामना मन में रखने से सफलता प्राप्त नहीं होती, इसके लिए मनुष्य को अथक परिश्रम और पुरुषार्थ करना पड़ता है। अपने लक्ष्य और उद्देश्य के प्रति समर्पित होना पड़ता है, तभी मनुष्य सफलता के शिखर को छूने में सफल हो पाता है।

सबसे अलग, सबसे जुदा, एक बेहतरीन सफल व्यक्तित्व के स्वामी महाशय धर्मपाल जी का अनुभव अपने आप में अनुपम है, जिस पर चलकर उन्होंने स्वयं आसमान-सी बुलंदियों को छुआ है। यहाँ प्रस्तुत हैं उनके द्वारा अनुभव किए हुए सफलता के 6.....सूत्र

- ईमानदार बनना

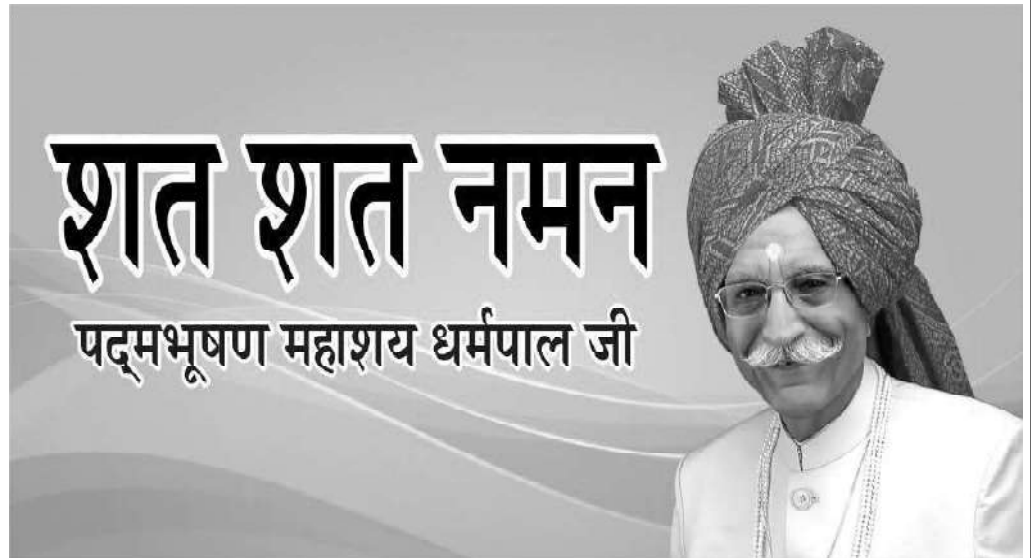
- मीठा बोलना

- आशीर्वाद माता-पिता का

- मेहनत करना

- कृपा परमपिता परमात्मा की

- प्यार संसार का प्राप्त करके चले तो सफलता के शिखर को अवश्य छू सकता है।



परिस्थिति में अडिग रहकर पूरी ईमानदारी से कर्म किया है, तभी तो आप डंके की चोट पर कहते थे। ईमानदार बनना-बहुत जरूरी है। ईमानदारी अपने निजी कर्तव्यों के प्रति, अपने परिवार के प्रति, समाज के प्रति, धर्म के प्रति और अपने राष्ट्र के प्रति हर व्यक्ति के भीतर होनी ही चाहिए।

2) मेहनत करना:- महाशय जी के इन सूत्रों का क्रम एक-दूसरे से जुड़ा

हुआ है। आपका पहला संदेश है-ईमानदार बनना और दूसरा मेहनत करना। इसका मतलब पहले बिंदु की व्याख्या में बताने की पूरी कोशिश की गई है कि भाई, केवल ईमानदार बनकर बैठे रहने से काम नहीं चलेगा, किस्मत को कोसते रहने से भी कुछ होने वाला नहीं है, भाग्य के भरोसे बैठने वाले लोग यही कहते हैं कि भाग्य से ज्यादा और समय से पहले किसी को कुछ नहीं मिलता ?

जबकि महाशय जी कहते थे - मेहनत करो, जी तोड़ मेहनत करो, लक्ष्य पाने के लिए पूरी ताकत लगा दो,

खुदी को कर बुलंद इतना, खुदा बंदे से खुद पूछे, बता तेरी रज़ा क्या है? ईश्वर किसी की मेहनत कभी नहीं रखता, कोई भी कर्म अपना फल जरूर देता है। यह अलग बात है कि हमने जितनी कुशलता से, मेहनत से जैसा कर्म किया है, वैसा ही फल हमें प्राप्त होगा। इसलिए मेहनत से अच्छे कर्म में करो, जिस कर्म को करके चैन मिले, अच्छी भूख लगे, रात को गहरी नींद आए और सुबह को चेहरे पर ताजगी हो। ऐसी सही योजना के साथ की गई मेहनत जरूर रंग लाती है, जैसे पत्थर पर घिसने के बाद ही मेहंदी हाथों को सुंदर बनाती है। इसलिए महाशय जी के वचन का भाव है कि लगातार मेहनत करो, सही दिशा में, सही समय पर मेहनत करो, सही योजना के साथ मेहनत करो, सफलता तुम्हारे कदम चूमेगी, सफलता तुम्हें तुम्हारी पहचान देगी, तुम्हें सफल लोगों में बैठने का हकदार बनाएगी।

3) मीठा बोलना:-

महाशय जी का यह अमृत वचन बड़ा प्यारा है। इस अमृत वाणी में बहुत बड़ा संदेश छिपा है। कुछ लोग ईमानदार तो होते हैं, मेहनती भी होते हैं लेकिन अपनी कड़वी बोली के कारण सब किए कराए पर खुद ही पानी फेर देते हैं। ऐसे लोग हमेशा पिछड़े ही रहते हैं। कोयल किसको क्या देती है और कौआ किसी से क्या लेता है, वाणी के कारण ही कोयल सबके मन को मोह लेती है और कौआ अपमान तिरीस्कार का भागी होता है।

रहीम दास जी ने कहा-

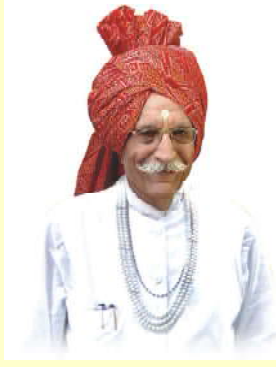
रहिमन जिह्वा बावरी, कह जाए सरस-पाताल,
कहकर ये भीतर भई, जूता खाए कपाल,

वाणी का महत्व रहीमदास जी के इस दोहे से पता चलता है कि ऊंचा-नीचा बोलकर जीभ तो अंदर दुबक जाती है लेकिन जूते सिर पर ही पड़ते हैं, इसलिए अपनी वाणी से मीठा बोलो।

प्रेरक वचन

महाशय जी के मुक्तक

- ◆ शुभकर्मों से कमाई हुई कीर्ति मरने के बाद भी अमरता देती है।
- ◆ भगवान की प्रार्थना सुख की संजीवन औषधि के समान है।
- ◆ मानव जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य है-मोक्ष और मोक्ष प्राप्ति के लिये सबसे अधिक आवश्यक है मानव सेवा।
- ◆ दुनिया में हर इंसान कर्म की खेती करता है। कुछ कर्म तुरंत फल प्रदान करते हैं, कुछ समय आने पर फलदायी होते हैं।
- ◆ माता-पिता को ईश्वर के समान समझकर उनकी यथाशक्ति हर संभव सेवा करनी चाहिये।
- ◆ ईश्वर का महत्व सदैव सर्वोपरि रखना चाहिये।
- ◆ मानव सेवा के शुभ कार्यों में अपनी शक्ति लगाइये, सत्संग, सेवा-साधना से अपने जीवन को सजाइए।
- ◆ ईश्वर का उपहार रोज खुशी बनकर हमारे सामने आता है। आगे बढ़कर उसका स्वागत करो नहीं तो समय बीत जायेगा।
- ◆ मूर्खता की दौड़ अंतहीन होती है, दौड़ते रहो, दौड़ते रहो, जीवन समाप्त हो जाता है, लेकिन दौड़ खत्म नहीं होती।
- ◆ जीवन में पाने की कामना सबकी होती है, लेकिन पाने के भाव से अलग हटकर जिसे देना आ जाये, वह व्यक्ति दिव्य गुणों से युक्त होकर सौभाग्यशाली बन जाता है।



चिरकाल तक स्मरण रहेंगे पद्मभूषण महाशय धर्मपाल

मानवता के शिखर पुरुष पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी के अमर होने पर भारत राष्ट्र के महामहिम राष्ट्रपति से लेकर अनेकानेक राजनेताओं ने उन्हें अपनी अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित की, सभी महानुभावों ने महाशय जी के प्रेरक महान व्यक्तित्व, मानव सेवा के कार्यों, देश प्रेम और दानशीलता आदि महान गुणों के प्रति हृदय के उद्गार प्रस्तुत करते हुए उन्हें स्मरण किया, महाशय जी की दिवंगत आत्मा की शांति, सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की और महाशय परिवार के प्रति शोक संवेदना व्यक्त की.....संपूर्ण जगत के प्रति प्रेमपूर्ण व्यवहार करने वाले महाशय जी एक ऐसी महान विभूति के रूप में विख्यात थे, जिनका वर्तमान में कोई उदाहरण नहीं है, ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने हमेशा अपने कर्म को सर्वोपरि माना तथा महान कर्मयोगी की भांति मानव सेवा को शिरोधार्य किया, महाशय जी ने सदैव कर्म पथ पर चलते हुए आसमान से ऊंची बुलंदियों को छुआ, ऐसे महाशय धर्मपाल जी के प्रति शोक संवेदना व्यक्त करने वालों की एक लंबी श्रंखला है।

भारत के अनमोल रत्न महाशय धर्मपाल जी के शत शत नमन



पद्म भूषण से सम्मानित, "महाशयां दी हट्टी" (एमडीएच) के अध्यक्ष श्री धर्मपाल गुलाटी जी के निधन से दुःख हुआ। वे भारतीय उद्योग जगत के एक प्रसिद्ध व्यक्तित्व थे। समाज सेवा के लिए किये गए उनके कार्य भी सराहनीय हैं। उनके परिवार व प्रशंसकों के प्रति मेरी शोक-संवेदनाएं।

श्री रामनाथ कोविंद, महामहिम राष्ट्रपति



भारत के प्रतिष्ठित कारोबारियों में से एक महाशय धर्मपालजी के निधन से मुझे दुःख की अनुभूति हुई है। छोटे व्यवसाय से शुरू करने बावजूद उन्होंने अपनी एक पहचान बनाई। वे सामाजिक कार्यों में काफी सक्रिय थे और अंतिम समय तक सक्रिय रहे। मैं उनके परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता हूँ।

श्री राजनाथ सिंह, रक्षामंत्री, भारत सरकार



मसालों के बादशाह के नाम से विख्यात एम.डी.एच. के संस्थापक महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त आर्य समाज के प्रति अनन्त श्रद्धा रखने वाले महाशय धर्मपाल जी का आज आकस्मिक निधन हो गया, यह जानकर अत्यंत कष्ट हुआ। वे अनेक संस्थाओं से जुड़े रहे। खासतौर से आर्य समाज के प्रति उनकी विशेष श्रद्धा थी। वो अनन्य ऋषि भक्त थे। मेरे साथ लम्बे समय तक उन्होंने काम किया है। महर्षि दयानन्द निर्वाण स्थली अजमेर के अध्यक्ष थे, मैं वहां पर संरक्षक था, उदयपुर के अंदर सत्यार्थ प्रकाश न्यास के वे अध्यक्ष थे, मैं वहां पर ट्रस्टी हूँ। इस तरह से अनेक संस्थाओं में उनके साथ काम करने का मौका मिला है। गुरुकुल, गोशाला, विद्यालय, अनाथालय आदि अनेकानेक संस्थाओं को अपने हाथों से करोड़ों करोड़ रुपए का दान दिया मैं उनके परिवार के प्रति सांत्वना व्यक्त करता हूँ परमात्मा परिवार को शक्ति दे और आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को भी परमात्मा इस कष्ट को सहन करने की शक्ति दे, यही मेरी ईश्वर से कामना प्रार्थना है।

स्वामी सुमेधानन्द जी, लोकसभा सांसद, सीकर, राजस्थान



श्री धर्मपाल गुलाटी जी का नाम हिन्दुस्तान में एक विश्वास का नाम है। भारतीय समाज में उल्लेखनीय योगदान देने वाले धर्मपाल जी के निधन का समाचार बहुत दुःखद है। ईश्वर उन्हें श्रीचरणों में स्थान दे एवं इस दुःख की घड़ी में परिजनों को कष्ट सहने का साहस दें।

श्रीमती प्रियंका गाँधी, महासचिव, कांग्रेस



Dharm Pal ji was very inspiring personality. He dedicated his life for the society. God bless his soul.

Shri Arvind Kejriwal - CM Delhi



महाशय जी आज हमारे बीच में नहीं हैं, उन्होंने अपने जीवन यात्रा का प्रारंभ बहुत ही सामान्य तरीके से किया था और सदा में अपने काम के प्रति ईमानदारी रखी और इतने बड़े दानवीर थे कि हमेशा अपने द्वारा कमाए हुए धन को समाज के लिए, देश के लिए देने में तत्पर रहते थे, एक प्रेरणा के पुंज थे और उनकी याद हमेशा बनी रहेगी। महाशय जी को आज मैं अपनी ओर से, भारतीय जनता पार्टी की ओर से श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

श्री आदेश गुप्ता, अध्यक्ष, बीजेपी, दिल्ली प्रदेश



श्रद्धेय श्री धर्मपाल गुलाटी जी को भावभीनी श्रद्धांजलि। देश के युवा उद्यमियों के लिए आप सर्वदा प्रेरणा के महान स्रोत रहेंगे। ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति और परिजनों को यह गहन दुःख सहन करने की शक्ति देने की प्रार्थना करता हूँ। ओ३म् शान्ति

श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश



महाशय जी गरीबों की सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। उनके ऑफिस में कोई भी आ सकता था, गरीब से गरीब हो या अमीर से अमीर हो, वे कहते थे कि मेरी दोस्ती गरीबों के साथ है। इतना प्यार और आशीर्वाद दिया उन्होंने कोई भी आवे, पांच थपकी देनी। उनके अन्दर दयाभाव था। बहुत बढ़िया जीवन जिया। बाकी उनके कई प्रोजेक्ट हैं, शिक्षा सेवा, स्वास्थ्य सेवा गरीबों की सेवा, और मानव सेवा, ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे।

श्री प्रेम अरोड़ा, एम.डी.एच. परिवार



सौम्य व्यक्तित्व के धनी महाशय धर्मपाल जी संघर्ष और परिश्रम के एक अद्भुत प्रतीक थे। अपनी मेहनत से सफलता के शिखर को प्राप्त करने वाले धर्मपाल जी का जीवन हर व्यक्ति को प्रेरित करता है। प्रभु उनकी दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें व उनके परिजनों को यह दुःख सहने की शक्ति दें। ओ३म् शान्ति

श्री अमित शाह, गृहमंत्री, भारत सरकार



ख्यातिलब्ध उद्यमी पद्मभूषण महाशय धर्मपाल गुलाटी जी के निधन का दुःखद समाचार प्राप्त हुआ। उद्योग जगत एवं समाज सेवा के क्षेत्र में आपका योगदान अविस्मरणीय एवं प्रेरक है। प्रभु श्री राम से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करें। ओ३म् शान्ति

श्री योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश



मैं लगभग 25 वर्षों से महाशय जी से परिचित हूँ। उनका जीवन हम सबके लिए अनुकरणीय है, आदमी कैसे छोटे-छोटे कार्य करके बड़ा बनता है और कैसे हृदय से इतना विशाल बनता है, महाशय जी की ऊंचाई की कल्पना नहीं की जा सकती। आर्य समाज के लिए उन्होंने जो कुछ किया है वह अपने आपमें एक उदाहरण है हम इतना ही कह सकते हैं कि उनका जीवन अपने आप में एक किताब है, हम जितना भी अनुसरण कर लें वो कम है। ओम शान्ति

श्री संतोष गंगवार, केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री



पद्म भूषणमहाशय धर्मपाल जी का अकस्मात चले जाना मानव सेवा,साधना, त्याग तपस्या के एक युग का अंत प्रतीत हो रहा है। महाशय जी एक नेकदिल, जिंदादिल और समस्त मानव जाति का उत्साहवर्धन करने वाले महापुरुष थे, आपने अपने जीवन में इतने नेकी के कार्य किए जिनकी गिनती करना अत्यंत कठिन कार्य है। आपके जीवन का प्रत्येक पल मानव सेवा को समर्पित था, आपने अपने जीवन में शुभ कर्मों की खेती करके अनेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं। इस दुःख की

घड़ी में मन अत्यंत व्यथित है, परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि भगवान महाशय जी की महान पुण्य आत्मा को शांति सद्गति की प्राप्ति हो और उनके परिवार को तथा उन्हें अपना आदर्श मानने वाले विश्व परिवार को इस असहनीय पीड़ा को सहन करने की शक्ति प्राप्त हो।

श्री सत्यपाल, सांसद, एवं कुलाधिपति, गुरुकुल कांगड़ी



Dharm Pal ji was very inspiring personality. He dedicated his life for the society. God bless his soul.

Shri Manish Sisodia - Deputy CM Delhi



सौम्य व्यक्तित्व के धनी महाशय धर्मपाल जी संघर्ष और परिश्रम के एक अद्भुत प्रतीक थे। अपनी मेहनत से सफलता के शिखर को प्राप्त करने वाले धर्मपाल जी का जीवन हर व्यक्ति को प्रेरित करता है। प्रभु उनकी दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें व उनके परिजनों को यह दुःख सहने की शक्ति दें। ओ३म् शान्ति

श्री प्रवेश वर्मा, सांसद, पश्चिमी दिल्ली



मसाला व्यापार एवं सामाजिक सेवा के लिए विश्व में मशहूर पद्म भूषण महाशय धर्मपाल जी क्यों निधन का समाचार सुनकर अत्यंत दुःख हुआ। आप एक प्रेरणादाईं इंसान थे उनकी आत्मा के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि और परिवारजनों के लिए शोक संवेदना व्यक्त करता हूँ।

श्री भूपेंद्र हुड्डा, पूर्व मुख्यमंत्री हरियाणा सरकार



महाशय धर्मपाल जी विश्व विख्यात व्यक्तित्व के धनी थे। जहां तक मेरी अपनी बात है तो मेरा और उनका 35 साल से अपनापन था। वे उम्र में मेरे से बड़े थे। जब मैं 1991 में चुनाव जीता और कृषि मंत्री, बना तो मुझे याद है वे मेरे गांव सफीदौ हरियाणा में मेरे को वो बधाई देने के लिए गए थे। वो दानी पुरुष भी थे, कितने हजारों, लाखों परिवार उन पर आश्रित थे मैं अपने हरियाणा की ओर से श्रद्धांजलि देता हूँ।

श्री बच्चन सिंह आर्य, पूर्व कृषि मंत्री, हरियाणा



मेरे पूज्य पिताजी पदम भूषण महाशय धर्मपाल जी के अमर होने पर उन्हें अंतिम विदाई देने के लिए, श्रद्धांजलि देने के लिए राष्ट्र नायक, धर्म नायक और आर्य समाज की सेवा भावी संस्थाओं के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं और अनेकानेक महानुभाव उपस्थित हुए, आज इस दुख की घड़ी में मेरे साथ पूरा देश और दुनिया के हजारों लोग साथ खड़े हैं। पिताजी का जाना मानव समाज की एक बहुत बड़ी क्षति है, आज एम डी एच परिवार अनाथ हो गया है, लेकिन ईश्वर के अटल नियम के सामने हम नतमस्तक हैं और एमडीएच परिवार की ओर से मैं सभी महानुभावों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने महाशय जी के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किए, उनकी अंतिम विदाई में साक्षी बने और मेरे लिए हिम्मत और हौसला अफजाई की, सभी के लिए मैं कृतज्ञता और आभार ज्ञापित करता हूँ। - श्री राजीव गुलाटी, डायरेक्टर एम.डी.एच

समस्त आर्य जगत की अश्रुपूरित श्रद्धांजलि



एक तांगा चलाने वाला साधारण सा इन्सान जिसने शून्य से अपनी यात्रा शुरू की और हजारों करोड़ों रुपए का साम्राज्य खड़ा किया, उन्होंने आर्थिक साम्राज्य स्थापित करने के साथ अनाथ बच्चों के लिए, गुरुकुल, कन्या गुरुकुलों में सैकड़ों गरीब बच्चों को पढ़ाने से लेकर, आदिवासी बच्चों की शिक्षा से लेकर के समाज सुधार और समाज कल्याण के अनेकानेक कार्यों में करोड़ों रुपए दान दिए, ऐसे दानवीर ऐसे तपस्वी महात्मा को मैं अपनी ओर से, आर्य समाज की ओर से, और समस्त साधु-सन्तों की ओर से हृदय से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

-योगगुरु स्वामी रामदेव, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार



पूज्य महाशय जी के निधन से सम्पूर्ण आर्य जगत को गहरा आघात पहुंचा है। वह हम सबके हृदय सम्राट थे। आर्य समाज पर उनके उपकार सदैव अविस्मरणीय रहेंगे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि। परमात्मा उनकी दिव्य आत्मा को सद्गति प्रदान करे और शोककुल परिवार को एवं समस्त आर्य जनों को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करे। ओ३म् शांति, शांति, शांति

-श्री सुरेश चंद्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा



आज आर्यजनों के लिए एक बहुत ही बड़ा हादसा हो गया। आर्य समाज के निरन्तर सहयोगी जिनका जीवन परमार्थ से पूर्ण था। महर्षि दयानंद के अनन्य भक्त वेद के प्रति समर्पित और भामाशाह के रूप में समस्त भारत में और भारत के बाहर भी स्थापित होने वाले महाशय धर्मपाल जी आज हमारे बीच नहीं रहे। उनका न रहना समाज की एक बहुत बड़ी क्षति है।

करोड़ों लोगों का सम्बन्ध उनसे जुड़ा हुआ था और लाखों लोग उनसे लाभान्वित हो रहे थे। आज उनका दुखद निधन निश्चित रूप से समाज, राष्ट्र और विशेषकर आर्य समाज के लिए एक बहुत बड़ी क्षति है। 98 वर्ष की अवस्था में अमर हुए महाशय जी को शत-शत नमन

-श्री प्रकाश आर्य, मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा



आज केवल देश की ही नहीं, विश्व की मानव जाति की एक महान सखिसयत हम सबको छोड़ करके चली गई है। एक ऐसा व्यक्तित्व जिस व्यक्ति को कोई दूसरी मिसाल वर्तमान में या पूर्व में हंडूना असम्भव है, जिन्होंने अपने जीवन में एक-एक पल परोपकार के लिया जिया, पांच-सात दिन पहले मैं जब उनसे मिला तो उन्होंने यही पूछा कि उस कार्य का क्या हुआ, वो कार्य कैसा चल रहा है, उस प्रोजेक्ट का क्या हुआ, एक ही बात उनके मन में थी कि मैं समाज का काम करता जाऊँ, व्यापार के साथ साथ समाज के लिए मेरी जो जिम्मेदारी है मैं उसको निभाता जाऊँ, राष्ट्रपति तक मैं नहीं समझता कोई ऐसा व्यक्तित्व होगा जो उनके व्यक्तित्व से न केवल परिचित होगा, बल्कि अभिभूत भी होगा। उनको देखकर कई लोगों को, कई महानुभावों को कहते हुए सुना कि हमारी आयु भी 98 वर्ष तक स्वस्थ रहते हुए हो पाएगी और वो जानते थे कि महाशय जी 98 की आयु में 4 बजे उठना, पार्क जाना, सैर करना, डम्बल करना, योगासन, प्राणायाम करना, मालिश करना, चिड़ियों, कौओं और कुत्तों को दाना डालना, फिर फैंकटरी जाना लोगों से मिलना, शाम को फिर से भोजन करने के बाद पार्क जाना लोगों के साथ फोटो खिंचवाना, बच्चों से मिलना, सैर करना आदि उनकी विलक्षण दिनचर्या थी। आज मैं उनको शत-शत नमन करता हूँ।

-श्री विनय आर्य, महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा



हम सबके आदरणीय महाशय धर्मपाल जी आज हमारे बीच नहीं रहे, आर्य समाज के प्रति उनकी निष्ठा और अनुराग सदियों तक याद रखा जाएगा। उनके साथ लम्बे समय तक काम करने का अनुभव मेरी जीवन की श्रेष्ठ उपलब्धि है। मेरा उनको शत शत नमन व श्रद्धांजलि

-श्री सुरेंद्र रैली, उपप्रधान, आर्य केंद्रीय सभा



महाशय धर्मपाल जी के निधन का समाचार सुनकर बड़ा ही दुख हुआ। उनके इस समय चले जाने से समाज को विशेषतः आर्य समाज को बड़ी भारी क्षति हुई है, जो कभी पूरी नहीं हो सकेगी। उनका जीवन एक आदर्श जीवन था। जहां आर्यसमाज का प्रचार नहीं था, वहां जाकर उन्होंने संस्थाएं बनाई और उनकी देख रेख भी लगातार करते रहे। उनके जाने से काफी संस्थाएं प्रमुख व्यक्ति के बिना हो गई हैं, जो सब आर्य

समाजियों को काम संभालना पड़ेगा। प्रतिदिन सवेरे यज्ञ करना, व्यायाम करना उनका एक विशेष नियम था। मैं उनको श्रद्धांजलि देता हूँ और आशा करता हूँ परमात्मा उनको सद्गति देंगे और उनके परिवार को यह दुख सहन करने की शक्ति देंगे।

-श्री योगेश मुंजाल, कार्यकारी प्रधान, टंकारा ट्रस्ट



महाशय धर्मपाल जी आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान थे। आज उनका निधन संपूर्ण आर्य जगत की क्षति है। मैं उन्हें शत शत नमन करता हूँ, मैं उनको श्रद्धांजलि देता हूँ। -सतीश आर्य, महामंत्री, आर्य केंद्रीय सभा, दिल्ली राज्य

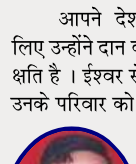


वर्तमान के दानवीर भामाशाह पदमभूषण महाशय जी का निधन इस राष्ट्र की बहुत बड़ी क्षति है। समाज के प्रत्येक वर्ग को आर्थिक सहयोग और अपना आशीर्वाद देने वाले महाशय धर्मपाल जी की कमी न केवल आर्य समाज अपितु पूरा राष्ट्र सदैव अनुभव करता रहेगा, मां भारती के सच्चे सपूत महाशय जी को मेरा शत-शत नमन व श्रद्धांजलि

-कीर्ति शर्मा, उपप्रधान, आर्य केंद्रीय सभा, दिल्ली राज्य



आर्य समाज के स्तंभ, पदम भूषण सम्मान से अलंकृत महाशय धर्मपाल जी अपनी अनंत यात्रा पर चले गए, महाशय जी यज्ञ, दान, तप की प्रतिमूर्ति थे, महाशय जी ने आर्य समाज के 146 वर्ष के इतिहास में 98 वर्ष महर्षि दयानंद के अनन्य उपासक के रूप में बिताए, उन्होंने शिक्षा के लिए स्कूल खोले, स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए अस्पतालों बनवाए, देश के युवा पीढ़ी के चरित्र निर्माण के कार्यों में सक्रिय योगदान दिया।

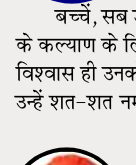


आपने देश विदेश में आर्य समाजों की स्थापना, वैदिक संस्थानों की सरपरस्ती के लिए उन्होंने दान की गंगा बहा दी। महाशय जी का हमारे बीच से चले जाना एक अपूरणीय क्षति है। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनके गुण कर्म स्वभाव के अनुसार सद्गति प्राप्त हो तथा उनके परिवार को उनके गुण ग्रहण करने की शक्ति प्राप्त हो।

-श्री पूनम सूरी, प्रधान, डी ए वी प्रबंधकत्री समिति



बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी महाशय धर्मपाल जी केवल आर्य समाज ही नहीं अन्य समाजिक, व्यक्तिगत छोटे से छोटे और बड़े से बड़े जिनके प्रति हम यह सोचते हैं कि मैं यहां तक कैसे पहुंचे ऐसे समस्त लोगों को उनके प्रति आस्था, विश्वास, भावना, सम्मान, प्यार इज्जत, प्रकट करते हुए और उनसे प्रेरणा लेते हमने देखा। नौजवान से लेकर



बच्चों, सब उनसे प्रभावित और अनुप्राणित होते थे। वे व्यापार समाज के लिए, मानवता के कल्याण के लिए किया करते थे। परमात्मा के प्रति उनकी आस्था, उनकी भक्ति, उनका विश्वास ही उनको ऊर्जा देता था। आज हम सब अत्यंत दुःखी हैं महाशय जी अमर हैं, हम उन्हें शत-शत नमन करते हैं।

-श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

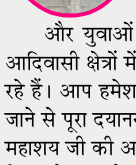


पदम भूषण महाशय धर्मपाल जी सदा के लिए अमर हो गए, उन्होंने अपने जीवन में वेद के वचन, सौ हाथों से कमाओ और हजारों हाथों से दान करो को चरितार्थ किया। ऐसे महापुरुष जिन्होंने देश की युवा पीढ़ी को दिशा प्रदान करने के लिए सार्वदेशिक आर्य वीर दल का हमेशा उत्साहवर्धन किया। पूज्य महाशय जी कहा करते थे कि किशोरावस्था कच्चे घड़े के समान होती है उसे जैसा आकार दोगे वह वैसा ही बन जाएगा। आर्य समाज का युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य वीर दल महाशय जी को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है, साथ ही परमपिता परमात्मा से हमारी प्रार्थना है कि महाशय जी की महान आत्मा को गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार सद्गति प्राप्त करे और उनके परिवार को इस असहनीय पीड़ा को सहन करने की शक्ति प्राप्त हो।

-आचार्य देवव्रत, प्रधान संचालक, सार्वदेशिक आर्यवीर दल



मानवता के परम हितैषी, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के प्रधान पदमभूषण महाशय धर्मपाल जी के कुशल निर्देशन में सेवा साधना, परोपकार के कार्य लगातार गतिशील हैं किन्तु उनका अचानक प्रस्थान समूचे आर्य जगत के लिए अत्यंत कष्टदायी है, आर्य समाज की अपूरणीय क्षति है, आप हमेशा मानव सेवा के लिए उत्साहवर्धन करते थे।



और युवाओं को सेवा से जोड़ने के लिए प्रयासरत रहते थे। आपके आशीर्वाद से आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा सेवा के कई बड़े-बड़े विद्यालय, गुरुकुल, छात्रावास इत्यादि चल रहे हैं। आप हमेशा गरीबों के उत्थान में बड़-चढ़कर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते थे, आपके जाने से पूरा दयानन्द सेवा श्रम संघ परिवार स्तब्ध है और परमपिता से प्रार्थना करता है कि महाशय जी की आत्मा को शांति सद्गति की प्राप्ति हो और हम आपके बताए रास्ते पर पूरी निष्ठा सेवा करते रहें। -जोगेंद्र खट्टर, महामंत्री, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ



महाशय धर्मपाल जी के निधन का समाचार सुनकर अत्यंत दुख हुआ। महाशय जी एक कर्मठ कर्मयोगी थे। वो एक पक्के आर्य समाजी थे। उन्होंने आर्य समाज के लिए जो कार्य किए उन्हें हमेशा आने वाली सदियों तक याद रखा जाएगा। महाशय जी ने हर वर्ग के व्यक्तियों को, हर वर्ग के बच्चों को प्रोत्साहित किया, अनेकों गुरुकुल, स्कूल, कालेज खोले और उनके कार्य हमेशा याद रखे जाएंगे, हम उनके इन कार्यों को आगे बढ़ाएं। यही एक सच्ची श्रद्धांजलि हो सकती है। मैं आर्य अनाथालय की तरफ से व उनसे सम्बन्धित संस्थाओं की तरफ से अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि महाशय जी को देता हूँ।

-नित्यंजय चौधरी, मंत्री, आर्य अनाथालय पटौदी हाऊस

समस्त आर्य जगत की अश्रुपूरित श्रद्धांजलि



आर्य हिंदू जगत के बहुत परम हितैषी, गुरुकुलों-गौशालाओं के संपोषक, आर्य जगत के महान नायक पदमभूषण महाशय धर्मपाल जी के आकस्मिक निधन का समाचार जानकर श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर राजस्थान के सभी अधिकारी, ट्रस्टी एवं अन्तरंग सदस्य हार्दिक शोक व्यक्त करते हैं। ऐसी जीव आत्माएं संसार में कभी कभी आती हैं और संसार का कल्याण करते हुए एक प्रेरणा स्रोत बन जाती हैं।

परमपिता परमात्मा से अमर हुए महाशय जी की आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करते हैं।

-कन्हैया लाल आर्य, मंत्री, परोपकारिणी सभा-अजमेर



महाशय धर्मपाल जी अपना नश्वर शरीर छोड़कर पंचतत्व में लीन हो गए, इससे पूरे विश्व की आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं को भारी क्षति हुई है। इसे पूर्ण करना असंभव है। आप एक महान आर्य दानवीर थे। कई संस्थाओं पर आपका विशेष आशीर्वाद था। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति और सद्गति प्राप्त हो और हम सभी को इस महान दुख को सहन करने की शक्ति दे।

-श्री अजय सहगल, मंत्री, श्री महर्षि दयानंद सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा



पदम भूषण महाशय धर्मपाल जी का अकस्मात प्रस्थान आर्य समाज के लिए बहुत ही कष्ट दायक है, महाशय जी यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सेवा, साधना के प्रणेता थे, महाशय जी ने अपने जीवन काल में यज्ञ, सत्संग और दान के गंगा प्रवाहित की है, उनके प्रस्थान से जो आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है, उसकी पूर्ति अत्यंत कठिन और

नामुमकिन है। महाशय एक संघर्षशील, सफलत के धनी, प्रेमपूर्ण ईंसान थे, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की ओर से मैं उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि हे भगवान महाशय जी की महान आत्मा को शांति सद्गति की प्राप्ति हो तथा उनके परिवार को इस असहनीय दुख को सहने की शक्ति प्राप्त हो।

-मास्टर रामपाल आर्य, प्रतिनिधि सभा हरियाणा



प्रेम और करुणा की प्रतिमूर्ति पदमभूषण महाशय धर्मपाल जी का अकस्मात प्रस्थान मानव समाज की बहुत बड़ी हानि है। महाशय जी की यशस्वी जीवन यात्रा संघर्ष पूर्ण तो रही लेकिन उन्होंने हमेशा सत्य, धर्म और न्याय पूर्ण आचरण करके मानव मात्र को प्रेरणा प्रदान की है। उनके द्वारा स्थापित मानव सेवा के प्रकल्पों को गति प्रदान करना और लगातार संचालित करना ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से महामना महाशय जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और साथ ही ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि ईश्वर उन्हें शांति सद्गति प्रदान करें तथा एमडीएच परिवार और आर्य परिवार को इस पीड़ा को सहन करने की शक्ति प्रदान करें

-श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा



आर्य जगत के महा-दानी महाशय धर्मपाल जी का देहावसान हो गया है। मैं स्वामी विवेकानंद परिव्राजक उनको अपनी ओर से विनम्र श्रद्धांजलि प्रस्तुत करता हूँ। वे आर्य जगत के भामाशाह कहलाते थे। उन्होंने अनेक आर्य संस्थाओं, गुरुकुलों, महाविद्यालयों तथा अन्य भी सामाजिक कार्यों में तन-मन धन से सहयोग किया। बड़ी मात्रा में दान दिया। यज्ञ करना, यज्ञों का प्रचार करना इत्यादि बहुत अच्छे अच्छे कर्म किए। उन्हें शत-शत नमन

-स्वामी विवेकानंद परिव्राजक



श्रीमददयानंद सत्यार्थप्रकाश न्यास अपने सम्बल, अपने अध्यक्ष को खोकर आज अनाथ हो गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संरक्षक, श्रीमददयानंद सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर के अध्यक्ष, आर्यों के प्राण महाशय जी आज हमारे मध्य नहीं रहे इससे अधिक पीड़ादायक समाचार क्या हो सकता है। विधाता के अटल विधान के समक्ष हम नतमस्तक हैं। पूज्य महाशय जी को हमारी और न्यास के सभी साथियों की अश्रुपूरित श्रद्धांजलि।

-श्री अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष



आज मैं अत्यंत दुखी हूँ कि दानवीर महात्मा धर्मपाल जी हमारे मध्य में नहीं रहें। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि जैसे संपूर्ण आर्य जगत में सूर्यास्त हो गया है। आज के लोग मानते हैं कि आर्थिकता और आध्यात्मिकता परस्पर एक दूसरे के विरुद्ध हैं, पर उन्होंने हमारे समक्ष यहां उत्तम एक उदाहरण है उन्होंने आर्थिकता में भी ऊंचे शिखर को प्राप्त किया तथा आध्यात्मिकता में भी। वे इतने दान प्रवृत्ति व उदार भाव के थे कि किसी अपरिचित व्यक्ति को भी धर्म कार्य करने में बाधा पड़ती थी वहां भी महाशय धर्मपाल जी आगे दिखाई पड़ते थे। वे महर्षि दयानंद सरस्वती के पदचिन्हों पर चला करते थे। उस महान आत्मा को शत-शत श्रद्धांजलि।

-आचार्य श्री एम राजेश, कुलपति, वेद रिसर्च फाउंडेशन-केरला



महाशय जी का शरीर आज हमारे बीच में से चला गया, पर उनके गुण, उनकी सेवा, उनका किया हुआ परोपकार गऊ माताओं को, गुरुकुलों को, कन्या गुरुकुलों को, स्कूलों को, अनाथालय को, विधवाओं को, उन्होंने अपना आशीर्वाद किस को नहीं दिया और किसको उन्होंने अपनी सेवाएं नहीं दी, इस दुनिया में यूँ तो हर कोई पैदा होता है और हर कोई मरता है, हर प्राणी जन्म लेता है, हर प्राणी मृत्यु को प्राप्त होता है, पर महाशय जी का जन्म लेना भी धन्य है, जीवन जीना भी धन्य है और उनका इस संसार से जाना भी धन्य है। ऐसे महाशय जी सदा जीवित रहेंगे, अपने कार्यों से, अपने पुण्यों से, अपनी सेवा से और अपने धर्म से, उन्हें मेरी भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

-स्वामी संपूर्णानंद



मैं आर्य कृष्ण लाल गहलोत मंत्री महर्षि दयानंद स्मृति भवन न्यास जोधपुर, हमें आज एक दुखद समाचार मिला कि महाशय पदमभूषण विश्व आर्य रत्न से सुशोभित, दान श्रेष्ठी, यज्ञप्रेमी, वैदिक धर्म के प्रेरक महाशय धर्मपाल गुलाटी जी का देहान्त हो गया। उनके शरीर का देहान्त हुआ है, उनकी आत्मा सदैव अमर रहेगी, हर आर्यों के अन्दर

प्रेरणा देती रहेगी, क्योंकि उन्होंने मानवता के लिए कार्य किया है, वैदिक धर्म के लिए कार्य किया है। महाशय जी को शत-शत नमन

-किशनलाल गहलोत, मंत्री, महर्षि दयानंद स्मृति भवन, जोधपुर



ओर से और देते हैं।



उन जैसे और धनाढ्य लोग आर्य समाज की सेवा के लिए आगे आएँ, तत्पर रहें इन्हीं शब्दों के साथ महाशय जी के चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

-आचार्य विजयपाल, गुरुकुल झज्जर



महाशय धर्मपाल ने सारे आर्य जगत के अन्दर सभी संस्थाओं को अपने दान से जीवित रखा, संचालित किया वो हमारे मध्य नहीं रहे, उनका यश, कीर्ति और मान-सम्मान सदा-सदा के लिए अमर रहेगा। वो शरीर से आज हमारे मध्य नहीं हैं लेकिन कर्मों से सारे संसार में विद्यमान रहेंगे। उनका नाम अमर रहेगा, उनके जाने से आर्य जगत की अपूर्णीय क्षति हुई है। हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि

-राजेंद्र दिवे, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र

महाशय जी के प्रति आर्य जगत के अधिकारी, कार्यकर्ताओं और सदस्यों की शेष भावभीनी श्रद्धांजलि अगले अंक में

मानव सेवा के शिखर पुरुष पदमभूषण महाशय धर्मपाल जी के प्रति देश के कोने कोने में और विदेशों की आर्यप्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों, एवं शिक्षा संस्थानों के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं और सम्मानित सदस्यों की संख्या लाखों करोड़ों में है, हमारे पास अनेक निष्ठावान महानुभावों ने महाशय जी के प्रति अपनी अपनी श्रद्धांजलि ई मेल, ट्विटर, फेसबुक, व्हाट्सएप, टेलीग्राम आदि के द्वारा भेजी है। सभी महाशय प्रेमियों के श्रद्धा सुमन आर्य सन्देश के अगले अंक में स सम्मान पूर्वक प्रकाशित किए जाएंगे। धन्यवाद

संपादक

पृष्ठ 3 का शेष

महाशय जी की महान शिक्षाएं ...

मीठा बोलने का मतलब यह नहीं है कि हम चापलूसों की श्रेणी में खड़े हो जाएं, कुछ लोग ज्यादा ही मीठे हो जाते हैं, मीठा गन्ना कोल्हू में पिलता है। इसका मतलब है कि जरूरत से ज्यादा बनावटी मीठापन भी नुकसान करता है। अपने स्वभाव से मीठे बालो, बाहर से नाटक मत करो, अपनी वाणी से किसी के दिल को ठेस मत लगाओ, किसी का अपमान करने के लिए कड़वा मत बोलो, किसी की बेबसी पर अपनी वाणी के तीर मत चलाओ, चाहे मौन रहो, लेकिन गलत बात अपने मुंह से मत बोलो, किसी के घर में, जीवन में जहर मत घोलो, अपने लिए चाहते हो, वैसा ही दूसरों से बताव करो। फिर जीवन के हर कदम पर आपको यश मिलेगा, सफलता मिलेगी।

4) कृपा परमपिता परमात्मा की:-

परमपिता परमात्मा बिना किसी भेदभाव के हमेशा सबके ऊपर अपनी कृपा बरसाता है। परमात्मा की कृपा ठीक वैसे ही बरसती है जैसे आसमान से बादल बरसते हैं। बादल कभी किसी से पक्षपात नहीं करते, वे जहां बरसते हैं वहां जल ही जल भर देते हैं। किंतु अगर कोई व्यक्ति अपना पात्र ही उल्टा करके रखे या अभिमान की ऊंची पहाड़ी पर बैठ रहे तो फिर बादल भी क्या करें? न पात्र में जल भरेगा और न घमंड की पहाड़ी पर जल रुकेगा।

इसी तरह परमात्मा की कृपा पाने के लिए अपनी पात्रता अर्जित करो, सीधे सरल बनकर रहो, घमंड में मत फंसो, परमात्मा सबसे बड़ा न्यायकारी है, उसके ऊपर भरोसा रखो, उसकी प्रार्थना उपासना में मन को लगाओ, उसकी रहमत पाओ, उसका शुक्राना करो, उसका सुबह-शाम नाम जपो, शिकायत मत करो, धन्यवाद के गीत गाओ, प्रेम-प्रसन्नता से भरे रहो, उसकी कृपा जरूर मिलेगी। महाशय जी के कहने का आशय यह है कि परमपिता परमात्मा की कृपा पाने के लिए अपने मन की जमीन को ठीक रखें। इस पर प्रेम प्यार के बीज बोएं, कांटे न उगाएं, इस संसार में सारी चीजें भरी हुई हैं, यहां प्रेम-प्रसन्नता भी है, सुख-शांति भी है और सबके हिस्से का आनंद भी है, लेकिन जो व्यक्ति जैसा बीजता है, वैसा ही फल पाता है, परमात्मा की कृपा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता, एक फूल भी नहीं खिलता, वह सबसे बड़ा है, सबका सगा है, उसकी कृपा पाने के लिए जीवन को नियंत्रित करो, नियम में चलो, जो भगवान के बनाए नियमों का पालन करता है, वही उसकी कृपा पाने का अधिकारी बनता है, और वही सफलता पाता है।

5) आशीर्वाद माता-पिता का:-

भारतीय संस्कृति में माता-पिता को सबसे बड़ा देव माना गया है, किंतु आजकल श्रीराम, श्रवण कुमार, नचिकेता, भीष्म पितामह के देश में माता-पिता

और घर के बड़े बुजुर्ग उपेक्षा और तिरस्कार के शिकार बनते जा रहे हैं। अपने ही घर-आंगन में बेगानों की भांति जीवन यापन करने के लिए मजबूर हैं। जिस संतान के लिए मां-बाप अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देते हैं, वही बच्चे अपने मां-बाप को खून के आंसू रूलाने में कसर नहीं छोड़ रहे हैं। माता-पिता के आशीर्वाद का महत्व समझकर संसार को सन्मार्ग दिखाते हुए महाशय जी अपना अनुभव बताते हैं कि जीवन में सफलता का परचम वही लहराते हैं, उन्नति के मार्ग पर वही आगे बढ़ते हैं, जो अपने माता-पिता का आदर-सत्कार करके उनका आशीर्वाद पाते हैं। महाशय जी यक्ष और युधिष्ठिर के संवाद के उस अंश को हमेशा दोहराते हैं जब युधिष्ठिर पक्ष के प्रश्न का जवाब देते हुए कहते हैं कि धरती से भारी मां की ममता है और आसमान से भी ऊंचे पिता के अरमान हैं, संसार में माता-पिता से बड़ा कोई देव नहीं है, इसलिए जो अपने माता-पिता का आशीर्वाद पा लेता है, उसके जीवन में कभी कोई कमी नहीं रहती। अतः महाशय जी का यह संदेश मानवमात्र के लिए अत्यंत उपयोगी और आधुनिक परिवेश में बहुत प्रासंगिक है।

6) प्यार संसार का:-

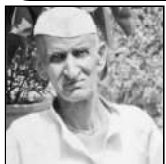
महाशय जी का यह सारगर्भित सूत्र बड़ा विचारणीय है। आजकल ज्यादातर लोगों कि यही शिकायत रहती है कि हमें कोई प्यार नहीं करता, हमें उचित मान-सम्मान नहीं मिलता, हम सबको फूल बांटते हैं, लेकिन बदले में हमेशा कांटे ही नसीब होते हैं। ऐसे लोगों के लिए महाशय जी का यह संदेश अत्यंत प्रेरक है।

महाशय जी के कहने का आशय है कि संसार का प्यार पाने के लिए पहले अपने आपसे स्वयं प्यार करो, जब तक आप स्वयं अपने आप से प्यार नहीं करोगे तो संसार भी आप से प्यार नहीं करेगा। दूसरी बात संसार के मालिक से बेइतहा प्यार करो, जो परमपिता परमात्मा का प्यारा होता है, उसे ही संसार प्यार करता है। तीसरा भगवान के हर बंदे से प्यार करो, जो उसके बंदों को प्यार करता है, प्रेम-करुणा-दया-सहानुभूति से भरा रहता है। सबके भले की कामना करता है, सबके सहयोग के लिए तत्पर रहता है, उसे ही संसार का प्यार मिलता है। संसार का प्यार पाने के लिए अपने व्यवहार को सरल बनाओ, घमंड में मत जियो, नफरत में मत रहो, अपने गुस्से पर काबू रखो, अपनी आदतों को सही रखो, संसार का प्यार भी मिलेगा और सम्मान भी मिलेगा।

महाशय जी के अनुभूत किए हुए सफलता के 6 सूत्र आज मानव समाज की धरोहर हैं। इन बिंदुओं के अनुसार जीवन पथ पर चलने से सफलता अवश्य मिलेगी। महाशय जी का जीवन एक खुली किताब था। आपने जीवन की यात्रा में प्रत्येक संघर्ष का इतनी हिम्मत और हौसले के साथ सामना कर यह सिद्ध कर दिया कि जीवन में असम्भव कुछ भी नहीं है। कर्म ही मनुष्य की महान शक्ति है और मनुष्य कर्मशील प्राणी है। मनुष्य जीवन में कर्म करना अलग बात है लेकिन श्रेष्ठ कर्म करना मानवता की पहचान है। महाशय जी के इस संदेश पालन करें और जीवन सफल बनाएं।.....

शोक समाचार

श्रीराम आर्य जी भजनोपदेशक का निधन



आर्य भजनोपदेशक परिषद् के सम्मानित सदस्य श्री बुजपाल आर्य भजनोपदेशक, निवासी बिजनौर, उत्तर प्रदेश के पूज्य पिता श्रीराम आर्य जी का 100 वर्ष की आयु में 25 नवम्बर 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।



श्री संजीव कोहली जी को मातृशोक

श्री संजीव कोहली एवं श्री राजीव कोहली जी की पूज्य माता श्रीमती राज कोहली जी का 84 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार ज्वालानगर शाहदरा के शमशान घाट में पूर्ण वैदिक विधि से किया गया।



श्री विरेन्द्र खट्टर जी का निधन

आर्य समाज जनकपुरी बी-1 के पूर्व प्रधान एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व सदस्य श्री विरेन्द्र खट्टर जी का 26 नवम्बर 2020 को आकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी शोक सभा 28 नवम्बर 2020 का आर्य समाज मन्दिर, जनकपुरी बी-2 ब्लॉक में सम्पन्न हुई। सभी क्षेत्रीय आर्य समाज के अधिकारियों ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -सम्पादक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

| | | | |
|---------------------------------------|-----------------------|-------------------|------------------------------------|
| ● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 50 रु. | प्रचारार्थ 30 रु. | प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं |
| ● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 80 रु. | प्रचारार्थ 50 रु. | |
| ● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8 | मुद्रित मूल्य 150 रु. | | प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन |

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट

427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph.: 011-43781191, 09650522778

E-mail: aspt.india@gmail.com

सोमवार 7 दिसम्बर, 2020 से रविवार 13 दिसम्बर, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 10-11/12/2020 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 9 दिसम्बर, 2020

प्रतिष्ठा में,

राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की भावपूर्ण अन्तिम विदाई

कोरोना काल के बावजूद अंतिम दर्शनों को उमड़ा जन सैलाब

जब तक सूरज चांद रहेगा, महाशय जी का नाम रहेगा, महाशय धर्मपाल जी अमर रहें, वैदिक धर्म की जय गगन भेदी जयघोषों के बीच वेद मंत्रों की ध्वनि के साथ पंचतत्व में विलीन हुए महाशय धर्मपाल



महाशय जी की अंतिम यात्रा के साक्षी बने हजारों लोग

महाशय जी की अर्थी को कंधा देते हुए उनके सपुत्र श्री राजीव गलाटी जी एवं अन्य महानुभाव



महाशय जी के अन्तिम दर्शन कर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए उनके सुपुत्र, सुपुत्रियाँ, आर्यनेता, राजनेता एवं अनेक अन्य महानुभाव



महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प के संवर्धक, गुरुकुल गौतम नगर के विद्यार्थियों एवं कई गुरुकुलों के आचार्यों, संन्यासियों की उपस्थिति में पूर्ण वैदिक विधि से किया अन्तिम संस्कार

वर्तमान में गतिमान सदि के प्रसिद्ध सफल उद्योगपति, मानव सेवा के हिमालय, सबसे प्यारे, सबसे न्यारे, अनोखे, अनूठे, बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी, महर्षि दयानंद सरस्वती के अनन्य भक्त, आर्य समाज के सुजनहार, त्यागी, तपस्वी, कर्मवीर, धर्मवीर और महान दानवीर पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी 3 दिसंबर 2020 को प्रातःकाल 5:38 बजे नश्वर मानव देह को त्याग कर सदा सर्वदा के लिए अमर हो गए। महाशय जी की 98 वर्षीय सुदीर्घ जीवन यात्रा आज महायात्रा के रूप में परिवर्तित हो गई। संपूर्ण विश्व में आपके लाखों, करोड़ों चाहने वाले हर आयुवर्ग के नर-नारी, आर्यनेता, राजनेता, गुरुकुलों के ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणी, गृहस्थी-वानप्रस्थी, संन्यासी, विश्व स्तर पर हजारों आर्य समाज, समस्त आर्य सभाएं, आर्य शिक्षण संस्थाएं, गौशालाएं, समाज सेवी संगठन, चिकित्सा सेवा संस्थाओं इत्यादि के अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्यों के ऊपर मानो आज वज्रपात-सा हो गया। सभी ईश्वर के अटल सिद्धांत के समक्ष नतमस्तक होकर स्वयं को बेबस और लाचार महसूस करने लगे। महाशय जी के परलोक गमन की खबर संसार में आग की तरह फैल गई और देश के कोने-कोने से तथा विदेशों से अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करने का दौर शुरू हो गया। यह सर्वविदित है कि कोरोना काल के चलते दुःख, सुख में सम्मिलित होने पर भी सरकार का प्रतिबंध है। किंतु आज प्रेम और करुणा की प्रतिमूर्ति पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की अन्तिम विदाई में उनसे जुड़ा हर व्यक्ति सारे नियम, कानून को तोड़कर उनके अन्तिम दर्शन करने के लिए लालायित नजर आया। आर्य समाज के शीर्ष नेतृत्व, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों ने कुशलतापूर्वक संयम बनाए रखा। किंतु फिर भी दिल्ली सरकार के उप मुख्यमंत्री और शिक्षा मंत्री श्री मनीष सिंसोदिया जी, बागपत लोकसभा सांसद एवं गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति श्री सत्यपाल सिंह जी, श्री आदेश गुप्ता जी, अध्यक्ष भाजपा दिल्ली प्रदेश, श्री प्रवेश वर्मा जी, सांसद पश्चिमी दिल्ली, मास्टर रामपाल जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा, श्री कन्हैयालाल आर्य जी, मंत्री परोपकारिणी सभा अजमेर, श्री ओमप्रकाश आर्य जी, योग संस्थान फरीदाबाद, आचार्य ऋषिपाल जी, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, आचार्य विजयपाल जी, गुरुकुल झज्जर हरियाणा, श्री मनोज खण्डेरवाल जी, स्वामी सम्पूर्णानंद, एम.डी.एच. परिवार के सभी सदस्य, आर्य समाज के विभिन्न संगठनों के अधिकारी, कार्यकर्ता इस दुःख की घड़ी में स्वयं को आने से न रोक सके और सभी ने महाशय जी को विनम्र श्रद्धांजलि देते हुए अन्तिम विदाई दी।

महाशय जी की अन्त्येष्टि संस्कार को पूर्ण वैदिक विधान से किया गया। जब तक सूरज चांद रहेगा, महाशय जी का नाम रहेगा। महाशय जी अमर रहें। महाशय जी की जय हो, के नारों के बीच वेदमंत्रों की ध्वनियां लगातार गुंजती रही। अंत्येष्टि संस्कार में सभा के संवर्धक, गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारी मंत्रपाठ कर रहे थे। स्वाहा स्वाहाकार करते हुए घी और सामग्री की आहुतियां लगातार चलती रही। सारा वातावरण इतना भावपूर्ण था कि मानो आज एक युगपुरुष, युगप्रणेता हमारे बीच से विदाई ले रहा है और उपस्थित जनसमूह उनको विदाई देने के लिए अपने रोम-रोम से समर्पित है। इस दुःख की घड़ी में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य, महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प, आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश, हवन उत्थान समिति, सहयोग, महाशय धर्मपाल आर्य मीडिया सेंटर, दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यगण उपस्थित रहे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्योगिक क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह